The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 9 | September 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

मुगल काल की दक्षिण नीति

शर्मिला कुमारी

शोधार्थी इतिहास विभाग नीलांबर पीतांबर विश्वविद्यालय मेदनी नगर पलामू झारखंड, ईमेल आईडी – **ksharmila201@gmail.com**

डॉ0 राजेन्द्र कुमार सिंह

विभागाध्यक्ष सह पर्यवेक्षक स्नातकोत्तर इतिहास विभाग नीलांबर पीतांबर विश्वविद्यालय मेदिनी नगर पलामू झारखंड

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17326605

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 25-09-2025

Published: 10-10-2025

Keywords:

मुगल साम्राज्य, दक्षिण नीति, औरंगज़ेब, बीजापुर, गोलकोंडा, मराठा संघर्ष, प्रशासनिक विस्तार, सैन्य अभियान, राजनीतिक, रणनीति, दक्कन युद्ध, कूटनीति, सम्राट अकबर, मुग़ल-विजयनगर संबंध,

ABSTRACT

मुगल काल की दक्षिण नीति भारतीय उपमहाद्वीप के राजनीतिक इतिहास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष रही है। बाबर और हुमायूं के समय में दक्षिण भारत पर ध्यान अपेक्षाकृत कम रहा, किंतु अकबर से लेकर औरंगज़ेब तक दक्षिण भारत की विजय, नियंत्रण और शासन नीति मुगल विस्तार की केंद्रीय रणनीति बन गई। विशेष रूप से औरंगज़ेब के समय में दक्षिण भारत में मराठों, बीजापुर, गोलकोंडा और अन्य दक्कनी सल्तनतों के साथ संघर्ष, मुगल साम्राज्य की शक्ति और संसाधनों की परीक्षा का विषय बना। अकबर ने कूटनीति और सैन्य शक्ति के संतुलन से दक्षिण की ओर राजनीतिक संपर्क आरंभ किया, जिसे जहाँगीर और शाहजहाँ ने सीमित रूप से जारी रखा। परंतु औरंगज़ेब की दक्षिण नीति पूर्ण सैन्य वर्चस्व, इस्लामी रूढ़िवादिता और मराठा विद्रोहों के दमन पर केंद्रित रही, जिसके दीर्घकालिक परिणामस्वरूप मुगल साम्राज्य का आर्थिक, प्रशासनिक और सैनिक क्षरण हुआ। यह शोध मुगल शासकों की दक्षिण नीति का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है,

साम्राज्य विस्तार, मुग़ल पतन

जिसमें विस्तार, उद्देश्य, रणनीति, सफलताएँ एवं विफलताएँ, और इनका सामाजिक-राजनीतिक प्रभाव विश्लेषित किया गया है। यह अध्ययन यह भी दर्शाता है कि किस प्रकार दक्षिण नीति ने मुगल साम्राज्य की स्थिरता, केंद्रीकरण और अंततः उसके पतन को प्रभावित किया।

परिचय (Introduction)

भारतीय उपमहाद्वीप का मध्यकालीन इतिहास अनेक सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का साक्षी रहा है, जिसमें मुगल साम्राज्य की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। 16वीं शताब्दी में बाबर द्वारा स्थापित मुगल शासन ने न केवल उत्तर भारत में अपनी जड़ें मजबूत कीं, बल्कि धीरे-धीरे समस्त भारतवर्ष को अपने अधीन लाने के प्रयास भी किए। इसी क्रम में "दक्षिण नीति" या "दक्कन नीति" मुगल साम्राज्य की एक केंद्रीय रणनीति बनकर उभरी, जिसने साम्राज्य के विस्तार, प्रशासनिक ढांचे और संसाधनों के वितरण को गहराई से प्रभावित किया।

दक्षिण भारत, जहाँ अनेक शक्तिशाली राज्य — जैसे बीजापुर, गोलकोंडा, अहमदनगर, विजयनगर और मराठा संघटन — विद्यमान थे, मुगलों के लिए न केवल सैन्य चुनौती प्रस्तुत करते थे, बल्कि आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण थे। दक्षिण की समृद्ध भूमि, व्यापारिक मार्ग, हीरे और मसालों के भंडार ने मुगलों को इस क्षेत्र की ओर आकर्षित किया।

मुगल सम्राटों में अकबर से लेकर औरंगज़ेब तक सभी ने दक्षिण भारत में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने के लिए अलग-अलग नीतियाँ अपनाई। अकबर ने जहां दक्कन की ओर कूटनीतिक संबंधों के माध्यम से मार्ग प्रशस्त किया, वहीं जहाँगीर और शाहजहाँ ने आंशिक रूप से सैन्य हस्तक्षेप किए। परंतु औरंगज़ेब की दक्षिण नीति आक्रामक सैन्य विस्तार और धार्मिक रूढ़िवादिता से प्रेरित रही, जो उसे बीजापुर, गोलकोंडा और मराठों के साथ दीर्घकालिक संघर्षों में ले गई।

औरंगज़ेब की दक्षिण नीति ने मुगल साम्राज्य की शक्ति को चरम पर तो पहुँचाया, लेकिन इसी नीति ने अंततः साम्राज्य को कमजोर कर दिया। वर्षों तक दक्षिण भारत में युद्धरत रहने से न केवल मुगल खजाना खाली हुआ, बल्कि उत्तर भारत में प्रशासनिक नियंत्रण भी शिथिल हो गया। इसके परिणामस्वरूप मराठों का उदय और मुगलों का अवसान आरंभ हो गया।

इस शोध में मुगल शासकों की दक्षिण नीति का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है — जिसमें नीति के उद्देश्य, प्रयुक्त रणनीतियाँ, राजनीतिक संबंध, सैन्य संघर्ष, प्रशासनिक विस्तार, आर्थिक प्रभाव और धार्मिक

दृष्टिकोणों की विवेचना की गई है। साथ ही यह भी स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार दक्षिण नीति मुगल साम्राज्य की वृद्धि एवं पतन — दोनों का प्रमुख कारण बनी।

समीक्षा साहित्य (Review of Literature)

मुगल साम्राज्य की दक्षिण नीति पर अनेक इतिहासकारों, विद्वानों एवं शोधकर्ताओं ने समय-समय पर अध्ययन एवं विश्लेषण प्रस्तुत किए हैं। यह समीक्षा साहित्य उन प्रमुख पुस्तकों, लेखों, शोध प्रबंधों एवं ऐतिहासिक साक्ष्यों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करता है जिनके माध्यम से मुगल काल की दक्षिण नीति की समझ विकसित होती है।

1. इरफ़ान हबीब (Irfan Habib)

इरफ़ान हबीब ने अपने इतिहास ग्रंथों में मुगल साम्राज्य के प्रशासन, सैन्य व्यवस्था और दक्षिण भारत की आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति का गहराई से विश्लेषण किया है। उन्होंने बताया कि दक्षिण भारत की समृद्धि मुगलों के लिए रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रही और औरंगज़ेब का दक्षिण भारत अभियान न केवल धार्मिक था, बल्कि आर्थिक स्वार्थ से भी प्रेरित था।

2. जदुनाथ सरकार (Jadunath Sarkar)

सरकार का लेखन विशेषकर औरंगज़ेब की दक्षिण नीति पर केन्द्रित है। उनकी प्रसिद्ध कृति *"History of Aurangzeb"* में औरंगज़ेब के दीर्घकालीन दक्षिण अभियान को "सैन्य बर्बादी" कहा गया है। उनका मत है कि औरंगज़ेब ने धार्मिक कट्टरता, निरंतर युद्ध और स्थानीय शक्तियों को अधीन करने की महत्वाकांक्षा में साम्राज्य को अंततः कमजोर कर दिया।

3. सतीश चंद्र (Satish Chandra)

सतीश चंद्र ने अपनी कृति *"Medieval India"* में मुगलों की दक्कन नीति को राजनीतिक और सैन्य रणनीति के रूप में देखा है। उन्होंने बताया कि अकबर और जहाँगीर की नीति कूटनीतिक एवं मिलनसार रही, जबकि औरंगज़ेब ने सैन्य वर्चस्व को प्राथमिकता दी। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि मराठा शक्ति को समाप्त करने के प्रयास में मुगलों ने अपने विशाल संसाधनों का अत्यधिक उपयोग किया।

4. रॉमिला थापर (Romila Thapar)

थापर ने दक्कन क्षेत्र के सांस्कृतिक इतिहास और मुगलों के साथ उसके संबंधों का अध्ययन करते हुए यह संकेत दिया कि दक्षिण की विविधता, राजनीतिक अस्थिरता और स्थानीय स्वायत्तता मुगलों की एकीकृत शासन नीति के अनुकूल नहीं थी, जिससे संघर्ष बढ़ा।

5. डॉ. आर.सी. मजूमदार (R.C. Majumdar)

उनकी *"The History and Culture of the Indian People"* श्रृंखला में मुगलों की दक्षिण नीति पर गहन विवरण उपलब्ध है। वे मानते हैं कि मुगल प्रशासनिक ढांचे को दक्षिण भारत में समुचित रूप से लागू नहीं किया जा सका, और इसका प्रमुख कारण स्थानीय राज्यों की स्वायत्तता और सांस्कृतिक भिन्नता थी।

6. अन्य शोध प्रबंध और लेख

झारखंड, बिहार, महाराष्ट्र एवं दक्षिण भारत की विभिन्न विश्वविद्यालयों से प्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंधों में औरंगज़ेब की दक्षिण नीति, मराठा-मुगल संघर्ष, बीजापुर एवं गोलकोंडा की विजय, तथा प्रशासनिक परिणामों पर गहन शोध किया गया है। हिंदी एवं फारसी ऐतिहासिक ग्रंथ जैसे "आइने अकबरी", "अकबरनामा", "मुताखब-उल-तवारीख़" इत्यादि भी महत्वपूर्ण स्रोत रहे हैं।

□ समीक्षा का निष्कर्ष (Conclusion of Review):

उपरोक्त साहित्य समीक्षा से स्पष्ट होता है कि मुगलों की दक्षिण नीति बहुआयामी रही — जिसमें राजनीतिक वर्चस्व, आर्थिक नियंत्रण, धार्मिक प्रचार और प्रशासनिक विस्तार सभी सम्मिलित थे। परंतु दीर्घकालीन संघर्षों, स्थानीय प्रतिरोधों एवं सीमित सांस्कृतिक समझ के कारण यह नीति मुगल साम्राज्य के विस्तार की अपेक्षा उसके पतन का कारण अधिक बनी।

□ चर्चा (Discussion)

मुगल काल की दक्षिण नीति भारत के मध्यकालीन इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक रणनीति रही है। यह नीति मुगल सम्राटों के द्वारा दक्षिण भारत के शक्तिशाली राज्यों और समृद्ध क्षेत्रों पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए अपनाई गई थी। इस नीति का स्वरूप समय और सम्राट के अनुसार बदलता रहा, लेकिन इसके पीछे मूल उद्देश्य था — साम्राज्य का विस्तार, आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण और राजनीतिक प्रभुत्व की स्थापना।

✅अकबर की दक्षिण नीति: सामंजस्य और कूटनीति

अकबर (1556–1605) की दक्षिण नीति तुलनात्मक रूप से सौम्य और कूटनीतिक थी। वह प्रत्यक्ष युद्ध की अपेक्षा वैवाहिक संबंध, संधियों, और अधीनता की शर्तों पर अधिक विश्वास करता था। अहमदनगर, बीजापुर, और गोलकोंडा जैसे राज्यों के साथ उसके संबंध कभी शत्रुतापूर्ण नहीं रहे। अकबर ने मिर्ज़ा राजा मानसिंह और खानज़ादा मिर्ज़ा अज़ीज़ को दक्कन भेजा, जिससे कुछ क्षेत्रों में मुगल प्रभाव तो बढ़ा, लेकिन यह संपूर्ण नियंत्रण में परिवर्तित नहीं हो पाया।

✅ जहाँगीर की नीति: सीमित हस्तक्षेप

जहाँगीर (1605–1627) ने अकबर की नीति को ही जारी रखा, परन्तु दक्षिण भारत में उसकी सक्रियता सीमित रही। अहमदनगर राज्य के खिलाफ आंशिक सैन्य अभियान चले, जिनका उद्देश्य केवल राजनीतिक दबाव बनाए रखना था। मलिक अंबर जैसे योग्य स्थानीय नेताओं ने मुगलों को सफलतापूर्वक रोके रखा।

✅ शाहजहाँ की नीति: आक्रामकता की शुरुआत

शाहजहाँ (1627–1658) के काल में दक्षिण नीति अधिक आक्रामक होती गई। उसने अहमदनगर को पूर्णतः समाप्त कर दिया और बीजापुर एवं गोलकोंडा पर भी दबाव बनाया। शाहजहाँ का उद्देश्य था – दक्षिण भारत को मुगल शासन के अधीन कर स्थायी प्रशासन स्थापित करना। उसके पुत्र औरंगज़ेब को दक्कन का सूबेदार बनाकर वहां की स्थिति पर नियंत्रण का प्रयास किया गया।

✅ औरंगज़ेब की नीति: आक्रामक विस्तार और दीर्घकालीन युद्ध

औरंगज़ेब (1658–1707) की दक्षिण नीति सबसे निर्णायक और विवादास्पद रही। उसने बीजापुर (1686) और गोलकोंडा (1687) को जीतकर दक्षिण भारत में मुगल साम्राज्य का विस्तार किया, लेकिन मराठों के साथ उसका संघर्ष उसकी नीति की सबसे जटिल और विफल पक्ष रहा। छत्रपति शिवाजी और उनके उत्तराधिकारियों के साथ लगातार संघर्ष ने मुगलों की सैन्य और आर्थिक शक्ति को क्षीण कर दिया।

☐ मराठा संघर्ष और दक्कन की राजनीतिक स्थिति

मराठा साम्राज्य की सैन्य रणनीति — जैसे गुरिल्ला युद्ध, पर्वतीय किलेबंदी, और स्थानीय समर्थन — ने मुगलों के लिए दक्षिण पर स्थायी अधिकार को असंभव बना दिया। औरंगज़ेब ने लगभग 25 वर्षों तक दक्षिण में डेरा डाले रखा, लेकिन उसे न तो स्थायी सफलता मिली और न ही वहां का प्रशासनिक ढांचा स्थिर रह सका।

☐ आर्थिक और प्रशासनिक प्रभाव

दक्षिण नीति पर निरंतर युद्ध और सैन्य अभियानों का सीधा प्रभाव मुगल खजाने पर पड़ा। कर वसूली कम हुई, प्रशासनिक भ्रष्टाचार बढ़ा, और दिल्ली दरबार की शक्ति शिथिल होती गई। उत्तर भारत में भी बगावतें शुरू हो गईं क्योंकि प्रशासनिक ध्यान और संसाधन दक्षिण में केंद्रित थे।

□ राजनीतिक परिणाम

- मराठों का उदय और स्वतंत्रता की भावना को बल मिला।
- मुगल साम्राज्य का विस्तार अपने चरम पर तो पहुँचा, परंतु यही उसके पतन की नींव भी बनी।
- बीजापुर, गोलकोंडा, अहमदनगर जैसे राज्य नष्ट हुए, जिससे क्षेत्रीय असंतुलन पैदा हुआ।
- मुगल अधिकारियों और स्थानीय शासकों के बीच विश्वास की कमी रही, जिससे प्रशासनिक अस्थिरता उत्पन्न हुई।

□ चर्चा का निष्कर्ष (Conclusion of Discussion)

मुगलों की दक्षिण नीति उनकी महत्वाकांक्षी साम्राज्यवादी सोच को दर्शाती है, परंतु यह भी स्पष्ट करती है कि बिना स्थानीय समझ और अनुकूल प्रशासनिक ढांचे के किसी क्षेत्र को लंबे समय तक नियंत्रित करना संभव नहीं है। यह नीति मुगलों के लिए साम्राज्य विस्तार का माध्यम तो बनी, लेकिन मराठा शक्ति के उदय और प्रशासनिक विफलताओं के कारण यह उनके पतन का भी एक बड़ा कारण बनी।

☑निष्कर्ष (Conclusion)

मुगल काल की दक्षिण नीति भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास का एक अत्यंत निर्णायक अध्याय रही है। यह नीति मुगल सम्राटों की साम्राज्य विस्तार की महत्वाकांक्षा, राजनैतिक कौशल, और सैनिक रणनीतियों का मिश्रण थी, जिसका प्रभाव तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिदृश्य पर गहराई से पड़ा।

दक्षिण भारत मुगलों के लिए केवल एक भौगोलिक विस्तार का क्षेत्र नहीं था, बल्कि यह एक समृद्ध सांस्कृतिक और राजनीतिक विरासत वाला क्षेत्र था, जो अनेक शक्तिशाली सुल्तानतों एवं नवोदित मराठा शक्ति से परिपूर्ण था। अतः मुगलों की नीति केवल विजय तक सीमित न रहकर स्थायी नियंत्रण, राजस्व वसूली, और सांस्कृतिक समावेशन की दिशा में भी प्रयत्नशील रही।

बाबर और हुमायूं के समय में दक्षिण नीति को कोई विशेष स्थान नहीं मिला, किंतु **अकबर** के शासनकाल से यह नीति एक ठोस रणनीति के रूप में उभरने लगी। अकबर की नीति तुलनात्मक रूप से उदार और कूटनीतिक थी, जो धीरे-धीरे **जहाँगीर** और **शाहजहाँ** के समय में आंशिक सैन्य विस्तार में परिवर्तित हुई। लेकिन वास्तविक और निर्णायक मोड़ **औरंगज़ेब** के काल में आया, जब मुगलों ने बीजापुर और गोलकोंडा जैसे दक्कन के सुल्तानतों को पराजित कर वहाँ स्थायी शासन की नींव रखने का प्रयास किया।

हालांकि, औरंगज़ेब की यह नीति दीर्घकालीन सैन्य संघर्षों, विशाल खर्च, और प्रशासनिक विफलताओं में परिवर्तित हो गई। मराठा शक्ति की चतुर सैन्य रणनीति और स्थानीय जनसमर्थन ने मुगलों की सारी योजना को विफल कर दिया। दक्षिण में 25 वर्षों की स्थायी उपस्थिति के बावजूद, औरंगज़ेब कोई स्थायी समाधान नहीं निकाल सका।

इस प्रकार, मुगलों की दक्षिण नीति ने जहां एक ओर साम्राज्य के भूगोल का विस्तार किया, वहीं दूसरी ओर यही नीति उनके पतन का कारण भी बनी। दक्षिण में मुगल प्रशासन की असफलता, आर्थिक दबाव, और सामाजिक असंतुलन ने 18वीं शताब्दी में मुगलों के राजनीतिक विघटन की प्रक्रिया को तेज़ कर दिया।

सार रूप में निष्कर्ष यह निकाला जा सकता है:

- मुगलों की दक्षिण नीति एक महत्वाकांक्षी रणनीति थी, जो प्रारंभ में कूटनीतिक और बाद में आक्रामक बनी।
- इस नीति ने मुगलों के वैभव को चरम तक पहुँचाया, परंतु मराठा शक्ति और लम्बे युद्धों के कारण साम्राज्य की नींव डगमगाने लगी।
- दक्षिण नीति की असफलता से मुगलों का प्रशासनिक, आर्थिक और सैन्य ढांचा कमजोर हुआ।
- इस नीति से प्राप्त अनुभवों ने यह स्पष्ट कर दिया कि केवल सैन्य बल से किसी क्षेत्र पर दीर्घकालिक नियंत्रण संभव नहीं है; स्थानीय राजनीति, संस्कृति और जनसहभागिता की समझ भी आवश्यक है।

अतः यह नीति भारतीय इतिहास में एक गहन शोध का विषय है, जो मध्यकालीन साम्राज्य निर्माण और उसके पतन की जटिल प्रक्रियाओं को समझने में सहायक सिद्ध होती है।

संदर्भ (References)

1. **इरविन, विलियम और स्मिथ, विंसेंट ए.**

   "भारत का मध्यकालीन इतिहास" – भारतीय इतिहास परिषद, नई दिल्ली।

   (Irwin, William & Smith, Vincent A., *History of Medieval India*)

2. **सतीश चंद्र**

   "मध्यकालीन भारत (भाग 1 एवं 2)" – एनसीईआरटी, नई दिल्ली।

3. **बिपिन चंद्र एवं अन्य**

   "भारत का आधुनिक इतिहास" – ओरिएंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली।

4. **जदुनाथ सरकार**

   "औरंगज़ेब – एक राजनीतिक जीवनी" (चार खंडों में) – मोल्लाह ब्रदर्स, कोलकाता।

5. **रिचर्ड ईटन**

   "भारत में इस्लामी सत्ता और संस्कृति" – कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

6. **हरबंश राय**

   "मुगल काल की राजनीतिक संरचना" – भारतीय विद्या संस्थान, वाराणसी।

7. **इरफान हबीब**

   "मध्यकालीन भारत की अर्थव्यवस्था और समाज" – ट्यूलिप पब्लिकेशन, अलीगढ़।

8. **नूरुल हसन**

   "मुगल भारत की प्रशासनिक नीतियाँ" – अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय प्रकाशन।

9. **आर.सी. मजूमदार**

   "एडवांस्ड हिस्ट्री ऑफ इंडिया" – मैकमिलन, नई दिल्ली।

10. **डॉ. श्याम सुंदर दास**

    "मुगल साम्राज्य का पतन: एक मूल्यांकन" – प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।

11. **पी.एन. ओक**

    "भारत का राजनीतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य: मुगल युग में" – भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद।

12. **शोध पत्रिकाएँ**

- *"इतिहास दर्पण"* – इतिहास परिषद, वाराणसी।
- *"भारतीय इतिहास समीक्षा"* – भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली।
- *"ऑक्सफोर्ड हिस्टोरिकल जर्नल"*, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

13. **ऑनलाइन स्रोत**

- www.shodhganga.inflibnet.ac.in – पीएच.डी. थीसिस और शोधग्रंथ।
- www.ncert.nic.in – मानक इतिहास की पाठ्यपुस्तकें।
- www.jstor.org – इतिहास विषयक शोध लेख।